बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी (BAHDH)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2022

बी.एच.डी.सी.-103 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **पहला** प्रश्न **अनिवार्य** है ।*

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देश ।।
खुसरो रैन सोहाग की, जागी पी के संग ।
तन मेरो मन पीऊ को दोऊ भए एक रंग ।।
देख मैं अपने हाल को रोऊं, जार-ओ-जार ।
वे गुनवन्ता बहुत है, हम हैं औगुन हार ।।
चकवा चकवी दो जने इन मारे न कोय ।
ईह मारे करतार कै रैन बिछोही होय ।।

(ख) के पतिआ लए जाएत रे
मोरा पियतम पास ।
हिय नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन मास ।।

एकसरि भवन पिया बिनु रे
मोरा रहलो न जाय ।
सखि अनकर दुख दारुन रे
जग के पतिआय ।।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे
अपनो मन गेल
गोकुल तजि मधुपुर बस रे
कत अपजस लेल ।।

(ग) अखियाँ हरि दरसन की प्यासी ।
देख्यौ चाहतिं कमलनैन कौं, निसि दिन रहतिं उदासी ।।
आए ऊधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर फाँसी ।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, बृंदावन के बासी ।।
काहू के मन की कोउ जानत, लोगनि के मन हाँसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं कासी ।।

(घ) रामकथा सुंदर कर तारी । संसय बिहग उड़ावनिहारी ।।
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ।।
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ।।
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा करीति गुन नाना ।।

(ङ) मोर किरीट नवीन लसै मकराकृत कुण्डल लोल की डोरनि ।
ज्यों रसखान घने घन में दमकै बिबि दामिनि चाप के छोरनि ।
मारि है जीव तो जीव बलाय बिलोक बजाय लौंनन की कोरनि ।
कौन सुभाय सौं आवत स्याम बजावत बैनु नचावत मौरनि ।।

2. कबीर के काव्य का महत्त्व स्पष्ट कीजिए । *16*

3. जायसी की भक्ति भावना पर विचार कीजिए । *16*

4. सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालिए । *16*

5. तुलसीदास के काव्य के विभिन्न पक्षों की चर्चा कीजिए । *16*

6. रहीम के रचना संसार पर प्रकाश डालिए । *16*

7. मीराबाई की भक्ति भावना को रेखांकित कीजिए । *16*

8. घनानंद के काव्य में उपस्थित प्रेम और भक्ति के स्वरूप का मूल्यांकन कीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) नज़ीर के काव्य में उत्सवधर्मिता

(ख) जायसी के काव्य में लोक

(ग) विद्यापति की भक्ति-भावना

(घ) रसखान की भक्ति